Navchetana Homilies

Jan 13, 2019

Num 10:29-36

Is 45:11-17

Heb 3:1-6

Jn 1:14-18

प्रभु प्रकाश का दूसरा रविवार

पुराने विधान का महानायक मूसा इस्त्राएलियों का मुक्तिदाता एवं नियमदाता था। ईश्वर ने उसी को भेज कर मिस्त्र देश की गुलामी से अपनी जनता इस्त्राएलियों को बाहर निकलवाया और प्रतिज्ञात देश कनान की ओर अग्रसर करवाया। कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए मूसा ने अपनी जिम्मेदारीयों को निभाया। मरूभुमि के मार्ग में सिनई पर्वत पर प्रत्यक्ष होकर ईश्वर ने मूसा को दस आज्ञायें दीं जिनका ईमानदारी से पालन करने से इस्त्राएली ईश्वर की निजी प्रजा बनी रहेगी तथा ईश्वर उनके साथ रहकर सदा उनकी रक्षा करेगा। मूसा अपने चुनाव एवं कार्यों के कारण महान् जरूर था, लेकिन वह ईश्वर का एक सेवक मात्र था। इसलिये इब्रानियों के नाम पत्र में लेखक कहते हैं कि येसु मूसा से भी अधिक महान् है। संत

योहन कहते हैं कि संहिता तो मूसा द्वारा ही दी गयी! लेकिन अनुग्रह और सत्य येसु मसीह द्वारा ही मिला है।

अनुग्रह और सत्य। इसको हम कैसे समझें? अनुग्रह, कृपा ही है। ईश्वर अनुग्रह का भण्डार है, उसमें अनुग्रह की परिपूर्णता है। योहन कहते हैं कि उस परिपूर्णता से हम सबों को अनुग्रह पर अनुग्रह मिला है। ईश्वर की कृपा से ही हमें शक्ति, बुद्धि, विवेक, कार्यकुशलता, सुविचार, लक्ष्यबोध, परोपकार तत्परता आदि प्राप्त होता है। उसी कृपा के कारण हम स्वयं को समझने में समर्थ बनते हैं। हमारा जीवन ईश्वर की देन है। एक सेकण्ड के लिये भी ईश्वर हमें भूल जाये, तो हम जी नहीं सकते। क्योंकि जीवन हमें मुफ्त में दिया गया है। हमने कुछ देकर जीवन प्राप्त नहीं किया है। हमारा विश्वास भी ईश्वर की कृपा से हमें मिला है। विश्वास कुछ रीति–रिवाज़ों का संकलन या उनका आचरण नहीं है। सच्चा विश्वास ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पित होने को हमें बाध्य करता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी लोग अपने विश्वास को त्यागते नहीं, बल्कि उसके लिये मरने को तैयार हो जाते हैं। ऐसा करने वाले लोग संसार की दृष्टि में मूर्ख हैं, लेकिन उस त्याग के बल पर ही संसार गतिशील बना रहता है। यह विश्वास–दृढ़ता ईश्वरीय कृपा से ही मिल जाती है। उम्र और परिस्थिति के अनुसार बुद्धि का विकास होना स्वाभाविक माना जाता है। लेकिन ईश्वर की कृपा न हो तो वह बुद्धि किसी काम की नहीं है, वह काम

नहीं करती। प्रार्थनामय जीवन हो, आपसी सम्बन्धों की बात हो, किसी योजना का क्रियान्वयन हो, सब कुछ में ईश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है। मनुष्य अपनी बुद्धि और कौशल के बल पर बहुत कुछ कर सकता है, लेकिन ईश्वर की कृपा के बिना वह एक अर्थहीन व्यायाम मात्र रह जाता है। अनेक स्वयंघोषित विद्वान् ईश्वर के बिना इस संसार में सुखसमृद्धि और शान्ति कायम करने का सपना देखते हैं, और बड़ी–बड़ी योजनायें बनाते हैं, लेकिन दिन–ब–दिन वह समृद्धि और शान्ति लुप्त होती जाती है। न राष्ट्रों में शान्ति है, न घरों में, न ही व्यक्तियों में। हाँ, शाश्वत शान्ति ईश्वर की कृपा से ही होती है।

इस अनुग्रह या कृपा से जुड़ा है सत्य। सत्य क्या है? पिलातुस ने यह सवाल किया, लेकिन उत्तर सुनने के लिये नहीं रूका। क्योंकि सत्य अकसर कड़वा होता है। सत्य को स्वीकार करना आसान नहीं है। सत्य यह है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक हम अनिश्चित्ता के मार्ग से होकर आगे बढ़ रहे हैं, सत्य यह है कि जन्म से पहले हम कहाँ थे और मृत्यु के बाद हम कहाँ होंगे, यह हमें मालूम नहीं है, सत्य यह है कि आनेवाला पल हमारा नहीं है। लेकिन यह अपूर्ण सत्य है, पूर्ण सत्य यह है कि हमें जीवन दानस्वरूप मिला है और जीवनदाता की योजना अनुसार ही हमारा जीवन आगे बढ़ रहा है। तो असत्य क्या है? असत्य यह है कि हम जीवनदाता को

दरकिनार करके, उसकी योजना का तिरस्कार करके, अपने रास्ते आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं और अपनी योजना को आगे बढ़ाना चाहते हैं। संसार की सारी परेशानियों की जड़ इस असत्य में है। ईश्वर को भूल कर, इस धरती पर स्वर्ग उतारने का मनुष्य का प्रयास कामयाब नहीं होगा। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्रों में अभूतपूर्व और विस्फोटकात्मक प्रगति के कारण आज मनुष्य ने सुख–सुविधाओं में जो ऊँचाइयाँ पायी हैं, वह पचास वर्ष पहले मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता था। लेकिन इस प्रगति से मनुष्य की आध्यात्मिकता में, मानव दृष्टिकोण में, पड़ोसी प्रेम में, पारिवारिक संबन्धों में कितनी प्रगति हुई है? टूटे परिवारों और खण्डित विवाहों का मतलब क्या है? वृद्धाश्रमों में कराहते असहाय वृद्धजनों की कहानी का कारण क्या है? महिलाओं की असुरक्षा, अवयस्कों का मदिरापान और बालक–बालिकाओं के बढ़ते यौन अपराध किस बात का संकेत है?

एक तरफ ध्यानाश्रमों और प्रार्थना सभाओं की संख्या बढ़ती रहती है, तो दूसरी ओर इन सबों की सकारात्मक चेतना को नकारते हुए मनुष्य में शैतानी प्रवृत्तियाँ क्रान्ति मचा रही हैं। सत्य और असत्य के, पुण्य और पाप के, भलाई और बुराई के इस संघर्ष को समझनेवाले सत्य के पक्ष में है, लेकिन इस संघर्ष को नकारते हुए असत्य के, पाप के, बुराइ के पीछे चलनेवाले असत्य के पुजारी है। जिसको अपने रोग का

आभास नहीं है, वह वैद्य के पास नहीं जाता है, जो अपनी बेड़ियों को फूल–माला समझता है, उसको मुक्ति की आवश्यकता क्या है? जो असत्य के मार्ग पर चलते हैं, वे येसु रूपी मुक्तिदाता के पास नहीं आना चाहते हैं। असत्य उनको अन्धकार और अज्ञान का गुलाम बनाता है। येसु ने कहा– "सत्य तुम्हें स्वतन्त्र बना देगा, मैं सत्य का साक्ष्य देने आया हूँ, जो सत्य के पक्ष में हैं वही मेरी सुनते हैं।"

येसु के पक्ष में जो रहते हैं, वही मुक्ति पाते हैं। वह ज्योति में रहते हैं और समय का महत्व समझते हैं। अगला पल हमारा हो या न हो वर्तमान को पवित्र करते हुए, भविष्य की ओर अग्रसर होना ही हमारी जिम्मेदारी है। इसका मतलब यह है कि हम जीवन को सही दृष्टिकोण से देखें, ईश्वर के नियमों के अनुसार अपने जीवन को व्यवस्थित करें, ईश्वर पर भरोसा रखते हुए जीवन में आगे बढ़ें। तभी हम मुक्ति का मतलब समझ पायेंगे। अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से जीवन की ओर, असत्य से सत्य की ओर ले जाने में समर्थ हमारे मुक्तिदाता प्रभु येसु के चरणों में आत्मसमर्पण करने की कृपा के लिये हम प्रार्थना करें।

फादर माइकिल पालाँपरंबिल सि.एम.आई